भगवान् श्रीराम के दर्शनार्थ विविध साधन

महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी
उपाध्यक्ष
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

बहुत-से सज्जन मन में शंका उत्पन्न कर इस प्रकारके प्रश्न किया करते हैं कि 'दो प्यारे मित्र जैसे आपस में मिलते हैं, क्या उसी प्रकार इस कलिकाल में भी भगवान् के प्रत्यक्ष दर्शन मिल सकते हैं ? यदि यह सम्भव है तो ऐसा कौन-सा उपाय है कि जिससे हम उस मनोमोहिनी मूर्तिका शीघ्र ही दर्शन कर सकें ?'

यद्यपि मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ, तथापि परमात्मा की और महान् पुरुषों की दया से केवल अपने मनोविनोदार्थ दोनों प्रश्नों के सम्बन्ध में क्रमशः कुछ लिखने का साहस कर रहा हूँ।

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।।

(श्रीमद्भा० १२।३।४२)

'सत्ययुगमें निरन्तर विष्णु का ध्यान करने से, त्रेता में यज्ञ द्वारा यजन करने से और द्वापर में पूजा (उपासना) करने से जिस परमगति की प्राप्ति होती है, वही कलियुग में केवल नाम- कीर्तन से मिल जाती है।'

जैसे अरणि की लकड़ियों के मन्थन से अग्नि प्रज्वलित हो जाती है, उसी प्रकार सच्चे हृदय की प्रेमपूरित पुकार की रगड़ से, अर्थात् उस भगवान् के प्रेममय नामोच्चारण की गम्भीर ध्वनि के प्रभाव से भगवान् भी प्रकट हो जाते हैं। महर्षि पतञ्जलि ने भी अपने 'योगदर्शन' में कहा है

'स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः ।'

'नामोच्चारण से इष्टदेव परमेश्वर के साक्षात् दर्शन होते हैं।' वास्तव में नाम की महिमा वही पुरुष जान सकता है, जिसका मन निरन्तर श्रीभगवत्राम में संलग्न रहता है। नाम की प्रिय और मधुर स्मृति से जिसके क्षण-क्षण में रोमाञ्च

और अनुपात होते हैं, जो जल के वियोग में मछली की भांति क्षणभर के नाम-वियोग से भी विकल हो उठता है, जो महापुरुष निमेषमात्र के लिये भी भगवान् के नाम को नहीं छोड़ सकता और जो निष्काम भाव से निरन्तर प्रेमपूर्वक जप करते-करते उसमें तल्लीन हो चुका है, ऐसा ही महात्मा पुरुष इस विषय के पूर्णतया वर्णन करने का अधिकारी है और उसीके लेख से संसार में विशेष लाभ पहुँच सकता है।

मेरा अनुभव - कुछ मित्रों ने मुझे भगवन नाम के विषय में अपना अनुभव लिखने के लिये अनुरोध किया है, परंतु जब कि मैंने भगवन नाम का विशेष संख्या में जप ही नहीं किया, तब मैं अपना अनुभव क्या लिखूँ ? भगवत कृपा से जो कुछ यत्किंचित् नाम स्मरण मुझसे हो सका है, उसका माहात्य भी - पूर्णतया लिखा जाना कठिन है।

नाम का अभ्यास मैं लड़कपन से ही करने लगा था, जिससे शनैः शनैः मेरे मन की विषय-वासना कम होती गयी और पापों से हटने में मुझे बड़ी सहायता मिली। काम-क्रोधादि अवगुण कम होते गये, अन्तःकरण में शान्ति का विकास हुआ। कभी-कभी नेत्र बंद करने से भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का अच्छा ध्यान भी होने लगा। सांसारिक स्फुरणा बहुत कम हो गयी। भोगों में वैराग्य हो गया। उस समय मुझे वनवास या एकान्त स्थान का रहन-सहन अनुकूल प्रतीत होता था।

इस प्रकार अभ्यास होते-होते एक दिन स्वप्न में श्रीसीताजी और लक्ष्मणजी सहित भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन हुए और उनसे बातचीत भी हुई। श्रीरामचन्द्रजी ने वर माँगने के लिये मुझसे बहुत कुछ कहा, पर मेरी इच्छा कुछ भी माँगने को नहीं हुई। अन्त में बहुत आग्रह करने पर भी मैंने इसके सिवा और कुछ नहीं माँगा कि 'आपसे मेरा वियोग कभी न हो।' यह सब नाम का ही फल था।

इसके बाद नामजप से मुझे और भी अधिक लाभ हुआ, जिसकी महिमा का वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ। हाँ, इतना अवश्य कह सकता हूँ कि नामजप से मुझे जितना लाभ हुआ है, उतना श्रीमद्भगवद्गीतां के अभ्यास को छोड़कर अन्य किसी भी साधन से नहीं हुआ।

जब-जब मुझे साधन से च्युत करने वाले भारी विघ्न प्राप्त हुआ करते थे, तब-तब मैं प्रेमपूर्वक, भावना सहित नामजप करता था और उसी के प्रभाव से मैं उन विघ्नों से छुटकारा पाता था। अतएव मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि साधन-पथ के विघ्नो को दूर करने और मन में होने वाली सांसारिक स्फुरणाओं का नाश करने के लिये स्वरूपचिन्तन सहित प्रेमपूर्वक कि साधारण संख्या में भगवत्राम का जप करने से ही मुझे इतनी परम शान्ति, इतना अपार आनन्द और इतना अनुपम लाभ हुआ है, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता, तब जो पुरुष भगवन्नाम का निष्काम भाव से ध्यान सहित नित्य-निरन्तर जप करते हैं, उनके आनन्द की महिमा तो कौन कह सकता है।

कलिजुग सम जुग आन नहि जी नर कर बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल भव तर बिनहि प्रयास ।।

(रा० च०मा० ७।१०३ (क))

राम नाम मनिदीप धरु तुलसी भीतर बाहेरहूँ जौ जीह देहरी द्वार। चाहसि उजिआर ।।

प्रत्यक्ष भगवद्दर्शनके उपाय - आनन्दमय भगवान्के प्रत्यक्ष दर्शनके लिये सर्वोत्तम उपाय 'सच्चा प्रेम' है। वह प्रेम किस प्रकार होना चाहिये, इस विषयमें आपकी सेवामें कुछ निवेदन किया जाता है।

श्रीलक्ष्मण की तरह कामिनी-काञ्चन को त्यागकर भगवान् के लिये वन-गमन करने से भगवान् प्रत्यक्ष मिल सकते हैं।

ऋषिकुमार सुतीक्ष्ण की तरह प्रेमोन्मत्त होकर विचरने से भगवान् मिल सकते हैं।

श्रीराम के शुभागमन के समाचार से सुतीक्ष्ण की कैसी विलक्षण स्थिति होती है, इसका वर्णन श्रीतुलसीदासजी ने बड़े ही प्रभावशाली शब्दों में किया है। भगवान् शिवजी उमा से कहते हैं-

होइहैं सुफल आजु मम लोचन।
देखि बदन पंकज भव मोचन ।।

निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी।
कहि न जाइ सो दसा भवानी ।।

दिसि अरु बिदिसि पंच नहिं सूझा।
को मैं चलेउँ कहाँ नहि बूझा ।।

कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई।
कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई ।।

अबिरल प्रेम भगति मुनि पाई।
प्रभु देखें तरु ओट लुकाई ।।

अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा।

प्रगटे हृदयै हरन भव भीरा ॥

मुनि मग माझ अचल होड़ बैसा।
पुलक सरीर पनस फल जैसा ॥

तब रघुनाथ निकट चलि आए।
देखि दसा निज जन मन भाए ॥

(रा० च० मा: ३।१०।९-१६)

श्रीहनुमान् जी की तरह प्रेम में विह्वल होकर अति श्रद्धा से भगवान् की शरण ग्रहण करने से भगवान् प्रत्यक्ष मिल सकते हैं। कुमार भरत की तरह राम-दर्शन के लिये प्रेम-विह्वल होने से भगवान् प्रत्यक्ष मिल सकते हैं। चौदह साल की अवधि पूरी होने के समय प्रेममूर्ति भरतजी की कैसी विलक्षण दशा थी, इसका वर्णन श्रीतुलसीदासजी ने बहुत ही मार्मिक शब्दों में किया है-

रहेउ एक दिन अवधि अधारा।
समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥

कारन कवन नाच नहि आयउ।
जानि कुटिल कियौं मोहि विसरायउ ॥

अहह धन्य लछिमन बढ़भागी।
राम पदारबिंदु अनुरागी ॥

कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा।
ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥

जाँ करनी समुझे प्रमु मोरी।
नहि निस्तार कलप सत कोरी ॥

जन अवगुन प्रभु मान न काऊ।
दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥

(रा०च० मा १।२१)

मोरे जियें भरोस दृढ़ सोई।
मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ।।

बीतें अवधि रहहिं जाँ प्राना।
अधम कवन जग मोहि समाना ।।

राम बिरह सागर महुँ भरत मगन मन होत।
वित्र रूप धरि पवन सुत आइ गयउ जनु पोत ।।

बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कुस गात ।
राम राम रघुपति जपत स्त्रवत नयन जल जात ।।

(रा०च० मा ७। १११-८ ७१क, ख)

हनुमान् के साथ वार्तालाप होने के अनन्तर श्रीरामचन्द्रजी से भरत मिलाप होने के समय का वर्णन इस प्रकार है। शिवजी महाराज देवी पार्वती से कहते हैं-

राजीव लोचन स्त्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी।
अति प्रेम हृदयै लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुअन धनी ।।

प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिं जाति नहि उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुषमा लही ।।

बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ।।

अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।
बूड़त बिरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ।।

(राच मा० ७।५।७० १-२)

भगवान् श्रीराम का ध्यान - श्रीभगवान् ने गीता में ध्यान की बड़ी महिमा गायी है। ध्यान के प्रकार बहुत-से हैं। साधक को अपनी रुचि, भावना और अधिकार के अनुसार तथा अभ्यास की सुगमता देखकर किसी भी एक प्रकार से ध्यान करना चाहिये। एकान्त में आसन पर बैठकर साधक को दृढ़ निश्चय के साथ आगे लिखी धारणा करनी चाहिये-

१) मिथिलापुरी में महाराज जनकके दरबार में भगवान् श्रीरामजी अपने छोटे भाई श्रीलक्ष्मणजी के साथ पधारते हैं। भगवान् श्रीराम दूवकि अग्रभाग के समान हरित आभायुक्त सुन्दर श्यामवर्ण और श्रीलक्ष्मणजी स्वर्णाभ गौरवर्ण हैं। दोनों इतने सुन्दर हैं कि जगत् की सारी शोभा और सारा सौन्दर्य इनके सौन्दर्य समुद्र के सामने एक जलकण भी नहीं है। किशोर-अवस्था है। धनुष-बाण और तरकश धारण किये हुए हैं। कमर में सुन्दर दिव्य पीताम्बर है। गले में मोतियों की, मणियों की और सुन्दर सुगन्धित तुलसी मिश्रित पुष्पों की मालाएँ हैं। विशाल और बल की भण्डार सुन्दर भुजाएँ हैं, जो रत्नजटित कड़े और बाजूबंद से सुशोभित हैं। ऊँचे और पुष्ट कंधे हैं, अति सुन्दर चिबुक है, नुकीली नासिका है। कानों में झूमते हुए मकराकृति सुवर्णकुण्डल हैं। सुन्दर अरुणिमायुक्त कपोल हैं। लाल-लाल अधर हैं। उनके सुन्दर मुख शरत्पूर्णिमा के चन्द्रमा को भी नीचा दिखाने वाले हैं। कमल के समान बहुत ही प्यारे उनके विशाल नेत्र है। उनकी सुन्दर चितवन कामदेव के भी मन को हरने वाली है। उनकी मधुर मुस्कान चन्द्रमा की किरणों का तिरस्कार करती है। तिरछी भौहें है। चौड़े और उन्नत ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक सुशोभित है। काले, घुँघराले मनोहर बालों को देखकर भौरों की पंक्तियाँ भी लजा जाती हैं। मस्तक पर सुन्दर सुवर्ण मुकुट सुशोभित हैं। कंधे पर यज्ञोपवीत शोभा पा रहे हैं। मत्त गजराज की चाल से दोनों चल रहे हैं। इतनी सुन्दरता है कि करोड़ों कामदेवों की उपमा भी उनके लिये तुच्छ है

२) महामनोहर चित्रकूट पर्वत पर वटवृक्ष के नीचे भगवान् श्रीराम, भगवती श्रीसीताजी और श्रीलक्ष्मणजी बड़ी सुन्दर रीति से विराजमान हैं। नीले और पीले कमल के समान कोमल और अत्यन्त तेजोमय उनके श्याम और गौर शरीर ऐसे लगते हैं, मानो चित्रकूटरूपी कामसरोवर में प्रेम, रूप और शोभामय कमल खिले हों। ये नख से शिखा तक परम सुन्दर, सर्वथा अनुपम और नित्य दर्शनीय हैं। भगवान् राम और लक्ष्मण के कमर में मनोहर मुनिवस्त्र और सुन्दर तरकश बँधे हैं। श्रीसीताजी लाल वसनसे और नानाविध आभूषणों से सुशोभित है। दोनों भाइयों के वक्षःस्थल और कंधे विशाल हैं। वे कंधोंपर यज्ञोपवीत और वल्कल वस्त्र धारण किये हुए हैं। गले में सुन्दर पुष्पों की मालाएँ हैं। अति सुन्दर भुजाएँ हैं। कर कमलों में सुन्दर धनुष सुशोभित है। परम शान्त, परम प्रसन्न मनोहर मुखमण्डल की शोभा ने करोड़ों कामदेवों को जीत लिया है। मनोहर मधुर मुस्कान है। कानों में पुष्पकुण्डल शोभित हो रहे हैं। सुन्दर अरुण कपोल हैं। विशाल, कमल-जैसे कमनीय और मधुर आनन्द की ज्योतिधारा बहाने वाले अरुण नेत्र हैं। उन्नत ललाटपर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक हैं और सिर पर जटाओं के मुकुट बड़े मनोहर लगते हैं। तीनों की यह वैराग्यपूर्ण मूर्ति अत्यन्त सुन्दर है।